Chapter 11. उपभोग फलन Consumpti Function

Dr. Rajani Sontakke (Economics)

उपभोग फलन Consumption Function

उपभोग व्यय, उपभोग व्यय का महत्व
उपभोग प्रवृत्ति,
अर्थ,
बचत प्रवृत्ति, अर्थ,
उपभोग प्रवृत्ति की विशेषताएं, प्रकार,
सीमांत उपभोग प्रवृत्ति की विशेषताएं,
सीमांत उपभोग प्रवृत्ति प्रभावित करने वाले घटक, उपभोग प्रवृत्ति का महत्व।

उपभोग फलन

Consumption Function

उपभोग व्यय का महत्व

कींस के रोजग़ार के सामान्य सिद्धांत नसार अर्थव्यवस्था में रोजगार प्रभावशील माग पर निर्भर रहता है।रोजगार का स्तर बढ़ने के लिए प्रभावशील मागअर्थव्यवस्था में आवश्यक है।

प्रभावशील मांग समाज के कल खर्च के बराबर होती है।इसलिए मांग बढ़ने के लिए समाज का कुल खर्च बढ़ाना आवश्यक है

समाज के कल खर्च में उपभोग खर्च और निवेश खर्च इन दोनों का समावेश होता है।

इन दोनों खर्चों में वृद्धि होने से प्रभावशील मांग बढ़कर रोजगार का स्तर बढ़ता है।

उपभोग खर्च निवेश को प्रभावित करता है। इसलिए उपभोग वस्तु एवम पूजीगत वस्तु इन दोनों प्रकार की वस्तुओंकी माग बढ़कर उनके उद्योग में उत्पादन बढ़ाया जाता है।

इस क्रिया में अर्थव्यवस्था के बेरोजगार श्रमिकों को रोजगार प्राप्त होता है और अर्थव्यवस्था में रोजगार का स्तर बढ़ता है।

उपभोग प्रवृत्ति

अर्थ Meaning

डुडले दिल्लार्ड अनुसार, " आय के विभिन्न स्तरों पर होनेवाले उपभोग व्यय के विभिन्न परिणामोंको दर्शनीवाली सारणी को उपभोग प्रवृत्ति कहते हैं।"

C =। f(Y)

C = उपभोग

Y= आय

f। = फलन

उपभोग प्रवृत्ति कुल आय का वह भाग है जो उपभोग पर खर्च किया जाता है।

आय और उपभोग में फलनात्मक संबंध ही उपभोग प्रवृत्ति फलन है।

"A schedule showing the various levels of consumption, which corresponds to different levels of income is the schedule of propensity to consume.",

बचत प्रवृत्ति : Propensity to Save

अर्थ: मीनिंग

बचत, उपभोग पर खर्च न किया जानेवाला हिस्सा है।

आय स्थिर होनेपर उपभोग ज्यादा हुआ तो बचत कम होगी और उपभोग कम रहा तो बचत ज्यादा रहेंगी।

S I = f(Y)

S = बचत

Y = आय

f = फलन

उपभोग प्रवृत्ति की विशेषताएं

1. मनोवैज्ञानिक संकल्पना।
2. गरीबों की उपभोग प्रवृत्ति अमीरों से ज्यादा होती है।

3. आय और रोजगार उपभोग प्रवृत्ति पर निर्भर रहते है।
4. अल्पकाल का उपभोग खर्च।
5. दीर्घकालीन उपभोग प्रवृत्ति।

उपभोग प्रवृत्ति के प्रकार:

1. कुल उपभोग प्रवृत्ति।
2. औसत उपभोग प्रवृत्ति।
3. सीमांत उपभोग प्रवृत्ति।

कुल उपभोग प्रवृत्ति तालिका १

आय(Y) करोड़ रुपए	उपभोग व्यय (C)करोड़ रु.
०	४०
१००	१४०
२००	२००
३००	२९०
४००	३७०
५००	४४०
६००	५००
७००	५००

कुल उपभोग प्रवृत्ति

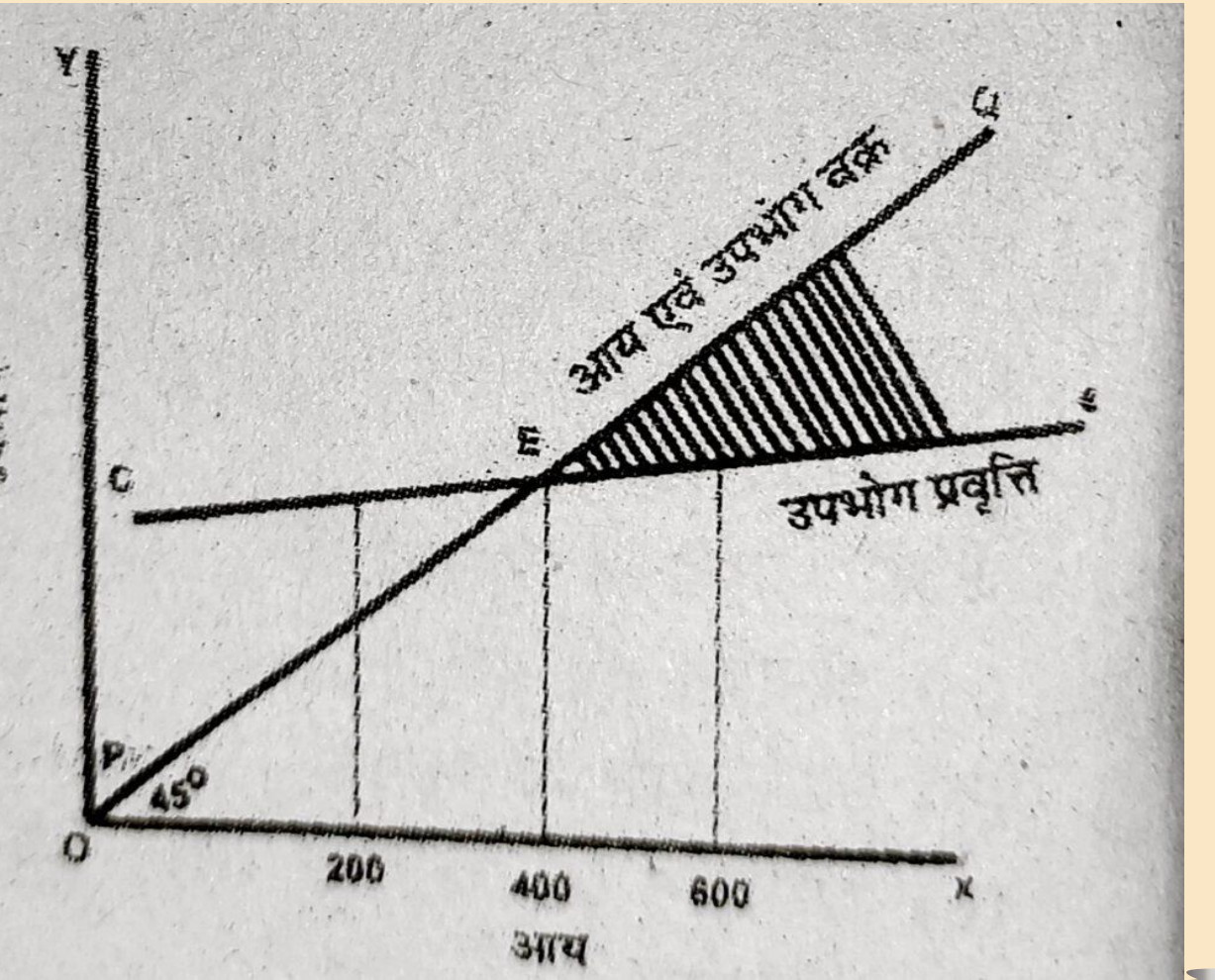

औसत उपभोग प्रवृत्ति

Average propensity to consume APC = C ÷ Y

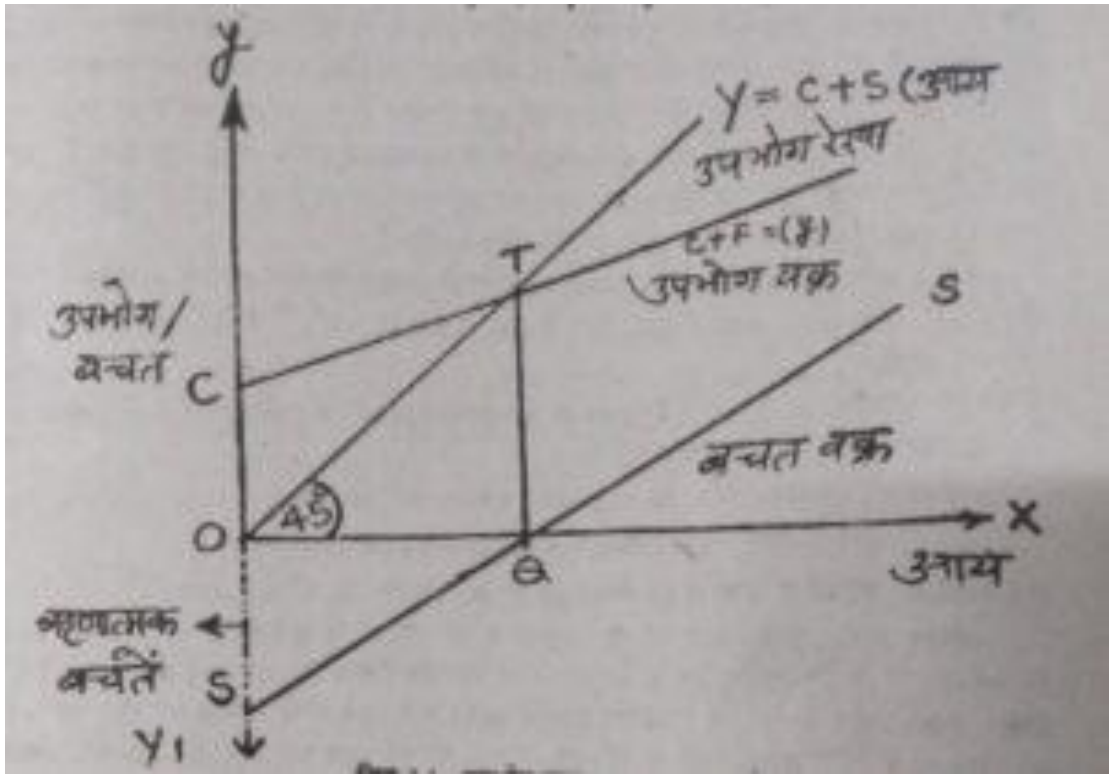

BiharBoardSolutions.com

आय (Y)	उपभोग (C)	APC	बचत (S)	APS
0	100	–	– 100	–
100	190	1.9	– 90	– 0.9
200	270	1.35	– 70	– 0.35
300	360	1.20	– 60	– 0.20
400	450	1.125	– 50	– 0.125
500	540	1.08	– 40	– 0.08
600	630	1.05	– 30	– 0.05
700	720	1.03	– 20	– 0.03
800	810	1.01	– 10	– 0.01
900	900	1.00	0	0

सीमांत उपभोग प्रवृत्ति

प्रो. कीजर के अनुसार," सीमांत उपभोग प्रवृत्ति यह उपभोग व्यय की वृद्धि से अनुपात होता है उसे सीमांत उपभोग प्रवृत्ति कहते हैं।

हम जानते हैं कि (We know that)

$$MPC = \frac{\Delta C}{\Delta Y} = \frac{\text{उपभोग में परिवर्तन}}{\text{आय में परिवर्तन}} = \frac{\text{Change in Consume}}{\text{Change in Yield}}$$

$$MPS = \frac{\Delta S}{\Delta Y} = \frac{\text{बचत में परिवर्तन}}{\text{आय में परिवर्तन}} = \frac{\text{Change in Saving}}{\text{Change in Yield}}$$

किंतु (But), $\Delta Y = \Delta C + \Delta S$

$$MPC + MPS = \frac{\Delta C}{\Delta Y} + \frac{\Delta S}{\Delta Y}$$

$$= \frac{\Delta C + \Delta S}{\Delta Y} = \frac{\Delta Y}{\Delta Y} = 1$$

MPC + MPS = 1

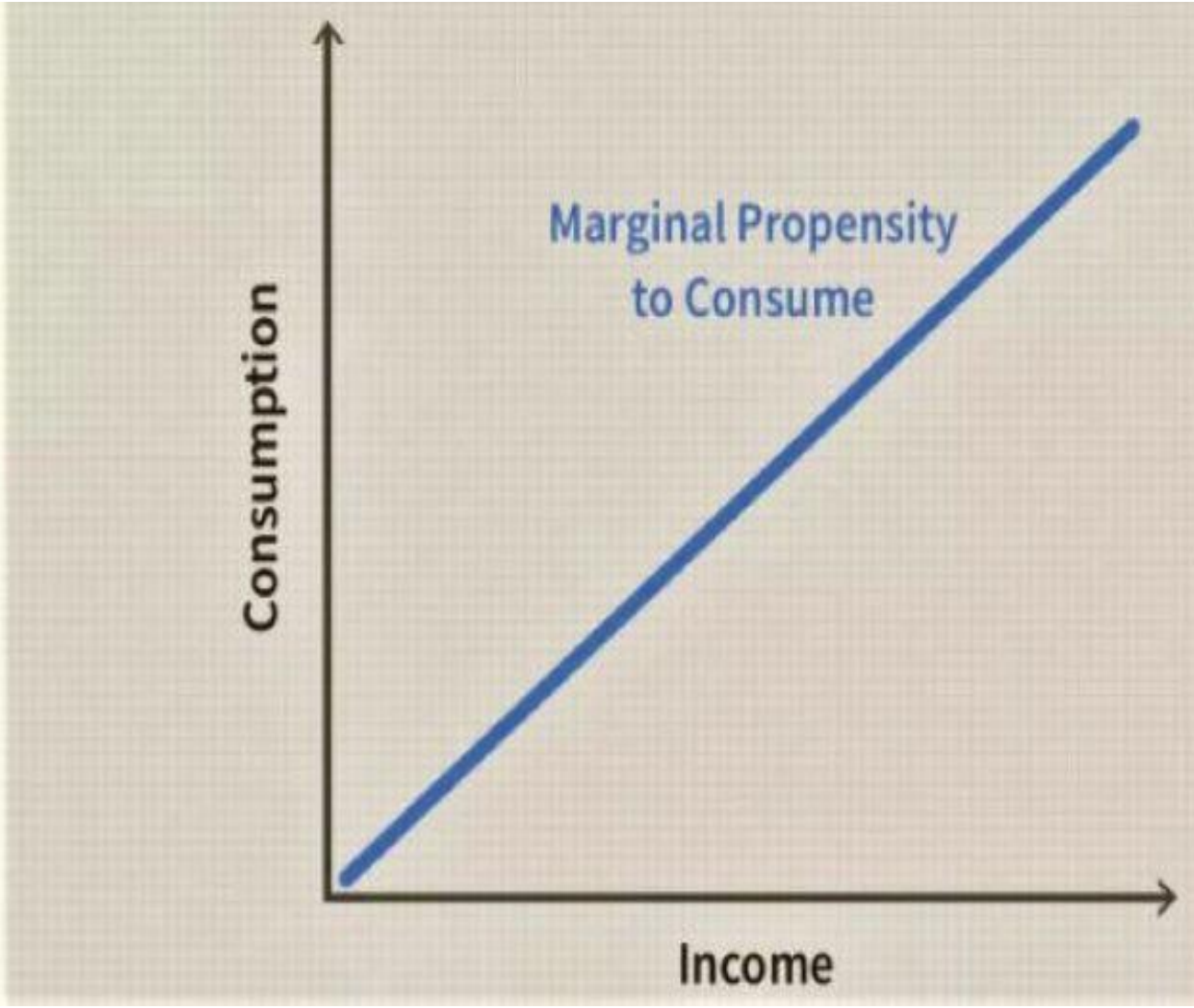

सीमांत उपभोग प्रवृत्ति की विशेषताएं

1. सीमांत उपभोग प्रवृत्ति ज्यादा से ज्यादा १ और काम से काम शून्य होती है।
2. सीमांत उपभोग प्रवृत्ति हमेशा धनात्मक होती है। वह ऋणात्मक नही हो सकती।
3. आय में जैसे जैसे वृद्धि होती है वैसे वैसे सीमांत। उपभोग प्रवृत्ति उत्तरोत्तर कम होती जाती हैं।
4. गरीबों की सीमांत उपभोग प्रवृत्ति अमीरों से ज्यादा होती हैं।
5. दीर्घकाल में सीमांत उपभोग प्रवृत्ति स्थिर होती है।

1. असामान्य परिस्थिति में सीमांत उपभोग प्रवृत्ति एक से ज्यादा हो सकती हैं।
2. सीमांत उपभोग प्रवृत्ति और सीमांत बचत प्रवृत्ति की जोड़ हमेशा एक के बराबर होती है।

उपभोग फलन को प्रभावित करने वाले घटक

मानसशास्त्रीय घटक

1. खबरदारी।
2. दूरदृष्टि।
3. प्रतिष्ठा।
4. लालची वृत्ति।
5. जीवनमान में सुधार।
6. आर्थिक स्वतंत्रता।
7. लाभ।
8. व्यवसायिक उद्दिष्ट।

वस्तुगत अथवा बाह्य घटक

1. आय।
2. आय का वितरण।
3. कीमत एवम मजदूरी का स्तर।
4. सरकार की राजकोषीय नीति।
5. नकद संपत्ति का संचय।
6. जनसंख्या की संरचना।
7. सामाजिक सुरक्षितता की सुविधाएं

9 निगमों की व्यवसायिक नीति।
10 अनपेक्षित लाभ अथवा हानि।
11 ब्याज दर।
12 नईंवस्तु बाजार में आना।
13 उधारी एवम हप्तेदारी।
14 टिकाऊ वस्तुओंका स्टॉक
15 दुर्लभ वस्तुओंकी उपलब्धता।

उपभोग प्रवृत्ति का महत्व

1. उपभोग प्रवृत्ति निवेश का विशेष महत्व स्पष्ट करती हैं।
2. उपभोग 'से' के नियम का खण्डन करता है।
3. उपभोग प्रवृत्ति व्यापार चक्र का स्पष्टीकरण करने में सहायक होती हैं।
4. न्यून रोजगार संतुलन का स्पष्टीकरण।
5. आर्थिक नीति निश्चित करने में सहायक।
6. सरकारी हस्तक्षेप का महत्व।
7. अधिक बचत का स्पष्टीकरण करने के लिए।

उपभोग प्रवृत्ति में वृद्धि करने के उपाय

1. आय का पुनर्वितरण।
2. सामाजिक सुरक्षितता की योजनाओं में वृद्धि।
3. वेतन में वृद्धि।
4. साख की सुविधाएं।
5. नगरीकरण।

Thank you